दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अपार उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अधिकाधिक आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए आर्य परिवार मंगल मिलन होली का आयोजन गत सात वर्षों से कर रही है। इसमें आर्य परिवारों की चार–चार पीढ़ियों के सदस्य भाग लेते हैं। इसमें विशेष रूप से युवा पीढ़ी भाग लेती है और आयोजन को सफल बनाने में वह सक्रिय भूमिका निभाती है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन और प्रवचन के कार्यक्रम होते हैं। प्रवचन से लोगों को वैदिक धर्म और आर्यसमाज की मान्यताओं का पता चलता है। भजन के माध्यम से संगीत का आनन्द मिलता है। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों से स्वस्थ और उपदेशात्मक मनोरंजन होता है। फूलों से होली खेली जाती है। हृदय प्रसन्नता से खिल उठता है। पुष्पवृष्टि का दृश्य अत्यंत विहंगम और आकर्षक होता है। इससे यहाँ आये लोगों को अपने संगठन की क्षमता और शक्ति का पता चलता है। यह एक ऐसा आयोजन होता है, जिसमें आर्यसमाज से जुड़े लोग अपने संबंधियों, शुभचिंतकों और इष्ट–मित्रों के साथ भाग लेते हैं। इससे हमारे संगठन से अनेक लोग जुड़ जाते हैं और संगठन मजबूत होता है। आर्यसमाज के कार्यों और गतिविधियों में वृद्धि होती है। आर्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को यहां पर अपनी अभिनय कला को प्रस्तुत करने का सुअवसर मिलता है। बाल कलाकारों की कला में निखार आता है। उनका उत्साह भी बढ़ता है। साथ में उनके विद्यालयों के बारे में जानकारी मिलती है। सभा द्वारा प्रारंभ की गयी योजनाओं के बारे में पता चलता है। इसमें शामिल लोगों की संगठन के कार्यों में भागीदारी बढ़ती है। इस वर्ष भी **आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह** उत्साह, उमंग और हर्षोल्लासपूर्वक पूरी भव्यता के साथ मनाया गया। यह आयोजन 28 फरवरी को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, राजा बाजार, निकट शिवाजी स्टेडियम में किया गया। इसमें **विशेष रूप से आमंत्रित दिल्ली के पूर्व मेयर एवं दिल्ली सरकार के पूर्व परिवहन मंत्री श्री राजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि** उन्हें यह आभास नहीं था कि **आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह** में हजारों आर्य शामिल होंगे। यहां मैं देख रहा हूँ कि इसमें हजारों बच्चे–बच्चियां, युवक–युवतियां, पुरुष–महिलाएं और वृद्ध–वृद्धाएं हर्षोल्लास के साथ इस कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। आने वाले दिनों में आर्यसमाज द्वारा इसी तरह के भव्य आयोजन और भी किये जाएं। उन्होंने लोगों को होली की बधाई देते हुए कहा कि हम अपनी प्राचीन संस्कृति की रक्षा और उसके प्रचार–प्रसार के लिए इस तरह के आयोजन करें। इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर मैं अपने आपको गौरवान्वित एवं हर्षान्वित अनुभव कर

– शेष पृष्ठ 5 पर

–: इस वर्ष होली के अवसर पर विशेष कार्यक्रम :–

सभा द्वारा बनाई गई योजनाओं को कार्यरूप देने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है

- ★ **महाशय श्री धर्मपाल जी की कामना है कि गांव–गांव में वेद का प्रचार–प्रसार हो। इसके लिए एक ऐसे प्रचार वाहन की जरूरत है जो आधुनिक संचार माध्यमों से युक्त हो। इसको ध्यान में रखते हुए महाशय जी द्वारा अपनी ओर से मल्टी मीडिया वेद प्रचार वाहन उपलब्ध कराने की घोषणा की गई।**
- ★ **आर्य कन्या गुरुकुल के भवन निर्माण का संकल्प श्री रामकृष्ण तनेजा जी ने लिया। अत: उनका स्वागत किया गया।**
- ★ **श्रीमती टंकारा श्री अरुणा सतीजा द्वारा लिखित एवं सभा द्वारा प्रकाशित बाल (लघु) सत्यार्थप्रकाश का विमोचन किया गया। सभा ने इसका प्रकाशन इसलिए किया इसे बच्चे पढ़ें और फिर मूल सत्यार्थप्रकाश (महर्षि दयानन्द प्रणीत) को पढ़ने के लिए प्रेरित हों। इसके साथ ही आम जन भी इसे पढ़ें और आर्य विचार धारा से अवगत हो सकें।**
- ★ **हर आर्य परिवार की यह समस्या है कि उन्हें अपने पुत्र–पुत्रियों के विवाह के लिए आर्य परिवार नहीं मिल पाते हैं। सभा ने इस समस्या के समाधान के लिए आर्य परिवार वैवाहिक पंजीकरण एवं वैवाहिक सेवा का शुभारंभ किया है। इस अवसर पर सभा के स्टाल पर पंजीकरण फार्म उपलब्ध थे।**
- ★ **समय–समय पर सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना अधिक से अधिक आर्यों को मिल सके, इसके लिए सभा ने नि:शुल्क एस.एम.एस. सेवा शुरू की है। सैकड़ों महानुभावों ने अपना तथा अपना पारिवारिक परिचय भरकर जमा करवाया। जो महानुभाव इसके लिए फार्म नहीं भर सके और वे इस सेवा का लाभ लेना चाहें तो वे एक कागज पर अपना नाम और अपना मोबाइल नम्बर लिखकर कार्यालय के पते पर भेज दें।**
- ★ **आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए मल्टी मीडिया आर्यसमाज का प्रदर्शन (सैम्पल) किया गया था। इसको देखने के लिए आर्यसमाजों का पंजीकरण किया गया। प्रदर्शनी में लोगों को इसके सिस्टम, हाल में साउंड, म्यूजिक और लाइटनिंग और उसके निर्माण के व्यय के बारे में जानकारी दी गयी। कई आर्यसमाजों ने इसे अपने यहां लगवाने में रुचि दर्शायी।**
- ★ **भारी संख्या में आर्यजनों ने अपने मोबाइल पर सभा द्वारा एयरटेल से तैयार कराई आर्यसमाज के गीतों की धुनें एवं वालपेपर आदि की डाउनलोड कराए।**

सांस्कृतिक एवं हास्य रंग के कार्यक्रम

आर्य विद्या मंदिर, आर्यसमाज केशवपुरम के विद्यार्थियों ने पाखण्ड पर प्रहार करते हुए लघु नाटिका–**भविष्यवाणी** का मंचन किया। नाटिका में ज्योतिष के पाखंड पर प्रहार किया गया। नाटिका में दिखाया गया कि एक ढोंगी पंडित किसी का हाथ देखकर उसके भविष्य के बारे में बता रहा था। तभी पंडित की पत्नी ने उसे बेटे के गुम होने का समाचार दिया और उससे पूछा कि बताओ बेटा कहां है। यह सुनना था कि ढोंगी पंडित बगलें झांकने लगा। यह देख उसकी पत्नी बोली कि जल्दी से बेटे को खोज कर लाओ। ढोगी पंडित ने कहा कि मुझे बेटे के बारे में कुछ पता नहीं है। अभी उसे खोजने जाता हूं। हाथ दिखाने आया युवक समझ गया कि यह पंडित ढोंगी है। जब इसे अपने ही बेटे के खोने के बारे में कुछ मालूम नहीं है तो भला यह मेरा क्या भविष्य बतायेगा। यह सब पाखंड है। यह कहता हुआ वहां से चला गया। हैरान–परेशान हो ढोंगी पंडित भी वहां से खिसक गया। इस नाटिका को लोगों ने बहुत सराहा और बाल कलाकारों का भारी उत्साह बढ़ाया। इससे लोगों का मनोरंजन हुआ और उन्हें यह संदेश भी मिला कि हमें ढोंगी पंडितों के जाल में नहीं फंसना चाहिए। **विद्यालय प्रधान श्री सत्यवीर पसरीचा, प्रबंधक श्री मनवीर सिंह राणा, प्रधानाचार्या श्रीमती सरोज यादव** ने इस आयोजन में सहयोग दिया।

महर्षि दयानन्द प० स्कूल, आर्य समाज शादीखामपुर के छात्र–छात्राओं ने **"हमको सब दुनिया जानें हम वीर दयानन्द के"** गीत प्रस्तुत किया। **यह वही गीत है जिसे हैदराबाद के सत्याग्रह आन्दोलन में आर्यसत्याग्रही गाते थे। यह एक ऐतिहासिक गीत है।** इस गीत के माध्यम से बाल कलाकारों ने दर्शकों को हैदराबाद के निजाम के खिलाफ आन्दोलन करने वाले आर्य सत्याग्रहियों के **त्याग और बलिदान की गौरवगाथा की याद दिला दी।** इससे लोगों को जहां एक ओर आर्यसमाज के इतिहास की जानकारी मिली वहीं संगीत और अभिनय का भी सबने आनन्द उठाया। बच्चों की इस प्रस्तुति की सभी ने भूरि–भूरि प्रशंसा की। **विद्यालय प्रधान श्री भगवानसिंह यादव, प्रबंधक श्री कृपाल सिंह आर्य, प्रधानाचार्या श्रीमती नीरज मेंहदीरत्ता** ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

दयानन्द आर्य कन्या गुरुकुल, सैनिक विहार की छात्राओं ने **"मेरे देश की धरती"** गीत प्रस्तुत किया। इस गीत को प्रस्तुत करने वाली सभी बालिकाएं मणिपुर और मिजोरम की रहने वाली हैं। ये बालिकाएं यहां से पढ़कर निकलने के बाद वैदिकधर्म के प्रचार–प्रसार का काम करेंगी। ये हाव–भाव और जोश उनके इस गीत को सुनने के बाद देखने को मिले। इतने कम संसाधनों में भी इतनी अच्छी प्रस्तुति ने उपस्थित जन समुदाय का ध्यान अपनी ओर खींचा और सबसे अपनी कला का लोहा मनवाया। इसकी प्रस्तुति में **संचालिका माता प्रेमलता जी, प्रधान श्री सुनील गुप्ता, प्रबंधक श्री जोगेन्द्र खट्टर** ने सहयोग दिया।

आर्य मॉडल स्कूल, आर्यसमाज आदर्श नगर के विद्यार्थियों ने **"वन्दे मातरम्"** गीत पेश किया। इस गीत को सुन लोगों में देशभक्ति की भावना हिलोरे मारने लगी। बच्चों ने इस गीत की गरिमा को ध्यान में रखते हुए पूरी लय और ताल के साथ प्रस्तुत किया। गीत को सुन लोग अपने को रोक न सके और वे भी उसे गुनगुनाने लगे। इससे ही अनुमान लगाया जा सकता है कि दर्शकों ने इस गीत को कितना सराहा। इस गीत की प्रस्तुति में **प्रधान श्री रामप्रकाश छाबड़ा, प्रबंधक श्री ओमप्रकाश चुघ, प्रधानाचार्या श्रीमती प्रोमिला सिंह** का सहयोग रहा।

दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्य समाज तिलक नगर के छात्र–छात्राओं ने एकजुट होकर आतंकवाद से लड़ने के लिए **"आतंकवाद देश का खतरा"** गीत का मंचन किया। इस नाटिका से लोगों को यह संदेश मिला कि आज देश से आतंकवाद को मिटाने के लिए हम सबका एकजुट होना होगा। इसके लिए आर्यों को आगे आना होगा। नाटिका ने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया। इस आयोजन में **प्रधान श्री बलदेवराज आर्य, प्रबन्धक श्री निरंजन सचदेवा, प्रधानाचार्या श्रीमती रेणुका कौल** ने सहयोग किया।

वैदिक शिक्षा केन्द्र, आर्यसमाज प्रीत विहार के विद्यार्थियों ने **"धरती सुनहरी अम्बर नीला"** गीत प्रस्तुत किया। यह गीत भी कम प्रभावी नहीं था। बाल कलाकारों में गजब का आत्मविश्वास भरा था। गीत के माध्यम से उन्होंने अद्भुत और मनोहारी प्रकृति के दृश्य को प्रस्तुत किया। प्रकृति के दृश्य को शब्दों में प्रस्तुत करना आसान नहीं होता और वह भी खुले मंच पर। लेकिन इन बच्चों ने बड़ी संजीदगी के साथ अपने गीत को प्रस्तुत किया। प्रस्तुतिकरण ने खूब वाहवाही पाई। इस कार्यक्रम के प्रति परिवारों में अपार रुचि देखने को मिली। इसमें प्रधान **श्री सुरेन्द्र रैली, प्रबंधक श्री आर. एस. आर्य, प्रधानाचार्या श्रीमती शशि गर्ग** ने सहयोग रहा।

आर्य विद्या मंदिर, आर्यसमाज केशवपुरम ने **"असतो मा सद् गमय"** गीत प्रस्तुत किया। इस प्रकार के गीत और बोल कम ही देखने और सुनने को मिलते हैं। इसके बोल बहुत ही कर्णप्रिय थे। गीत का प्रस्तुतिकरण मनमोहक और उच्चकोटि का था। बच्चों के कार्यक्रमों को बहुत पसन्द किया गया और उनका करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

प्रेरक स्मरण

आग्नेय सम्पादकः महाशय कृष्ण जी

सन् 1907 में गोरी सरकार ने लाला लाजपतराय जी को माण्डले जेल भेज दिया। पत्रकार शिरोमणि श्री महाशय कृष्ण जी ने इसे आर्यसमाज के लिए एक चुनौती समझा। लालाजी के बन्दी बनाए जाने से ही विदेशी शासक सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने आर्य समाजियों को कुचलने के लिए दमनचक्र आरम्भ कर दिया।

महाशय कृष्ण जी के 'दैनिक प्रताप' का जन्म तो सन् 1919 में हुआ था। साप्ताहिक 'प्रकाश' का जन्म सन् 1905 में हुआ था। 'प्रकाश' में आपने एक सम्पादकीय लिखा जिसका शीर्षक था, **'आजमायश का वक्त आ गया'** अर्थात् परीक्षा की घड़ी आ गई। इस लेख में यह लिखा गया कि आर्यसमाज को इसका उत्तर देना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाला जी के पक्ष में महात्मा मुंशीराम जी के पीछे लोहे की दीवार बनकर खड़ी हो गई। उस समय की दृष्टि से महाशय कृष्ण जी का 'प्रकाश' में प्रकाशित उपर्युक्त सम्पादकीय इतना कठोर समझा गया कि इंग्लैण्ड के एक समारचार पत्र ने इसका अनुवाद प्रकाशित करते हुए साथ अपना यह वाक्य जोड़ दिया: A firy Editor of Lahore writes. अर्थात् लाहौर का एक आग्नेय सम्पादक यह लिखता है। यह घटना मई सन् 1907 की है। इसके छह मास पश्चात् तक आर्यसमाज के आकाश पर सन्देह की काली घटायें मण्डराती रहीं। महाशय जी ने 'आर्यसमाज तथा सरकार' विषय पर बार–बार लेखनी चलाई।

सितम्बर में महाशय जी ने डल्हौजी जाने का मन बनाया। एक और बन्धु भी उनके साथ थे। श्री पं. बिशम्बरनाथ जी को साथ लेने के लिए आप दोनों बटाला रुक गए। आप अभी बटाला में ही थे कि लाहौर से तार मिला कि सरकार 'प्रकाश' पर अभियोग चलाने वाली है। आप लौट आयें। इस कारण से आप लाहौर वापस आ गए। आकर देखा तो गुप्तचर विभाग के लोगों ने आपके निवास को घेर रखा था। इससे प्रचारित समाचार को और बल मिला। भारत भर के पत्रों में यह समाचार प्रमुख रूप से प्रकाशित हो गया कि आर्यसमाज के पत्र 'प्रकाश' पर धारा 124अ के अधीन केस चलाया जायेगा।

आप कुछ दिन तो लाहौर में रुके रहे परन्तु आपको बन्दी नहीं बनाया गया। इस पर महाशय जी ने यह निर्णय लिया कि किसी पर्वत पर जाने की बजाय गुरुकुल चलें। वह अपना ही घर है। यदि गिरफ्तार हुए भी तो कोई हर्ज वाली बात नहीं। महात्मा मुंशीराम जी ब्रह्मचारियों को साथ लेकर सरस्वती यात्रा के लिए जाने वाले थे। जाते–जाते महात्माजी ने श्री महाशय कृष्णजी से कहा–"यदि गिरफ्तारी का वारण्ट आये तो मुझे अविलम्ब तार दे देना।" महात्मा जी के चले जाने पर महाशयजी व पं. बिशम्बरनाथ जी पूरा एक महीना गुरुकुल में ही ठहरे। सितम्बर के अन्त में महात्मा जी गुरुकुल में वापस आ गए। गुरुकुल आते हुए महात्मा जी देहली के एक विख्यात अंग्रेज बैरिस्टर से यह निर्णय कर आये कि यदि 'प्रकाश' पर सरकार केस करे तो आप 'प्रकाश' का केस लड़ें।

महाशय जी गुरुकुल से प्रस्थान करने लगे, तो महात्मा जी को नमस्ते करने उनकी कुटिया में पहुँचे। महात्मा जी ने विदा करते हुए पुनः कहा– "यदि तुम्हें गिरफ्तार किया जाय तो तत्काल मुझे तार कर देना। मैं उस समय लाहौर पहुँच जाऊँगा। मैं अभियोग लड़ूँगा।" कहानीकार सुदर्शन जी ने अपने एक गीत में ऋषि दयानन्द के बारे में लिखा था– ***पराई आग में जलना मरीजों की दवा होना। कोई सीखे दयानन्द से धर्म पर जाँ फिदा होना।।***

महाशय कृष्ण जी ने अपने एक सम्पादकीय में लिखा था– "मेरी गिरफ्तारी तो व्यवहार में न आई परन्तु महात्मा मुंशीराम जी के स्नेह की अमिट छाप मेरे मन पर है। मेरे लिए उनसे जो कुछ हो सकता था, उन्होंने किया तथा करने को तैयार थे.... मैं उनकी कृपा को कैसे भूल सकता हूँ।"

–राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर–152116

Cont. form last issue **The Sixteen Rituals of Aaryas**

Naamkaran Sanskaar

(The ritual of giving the child a name)

Following the Jaatakarm sanskaar is the fifth ritual of Naamakaran under which the baby boy or girl is given a name. To identify an object and to refer to it in dealings with other people, it is essential to give it a name. But is it sufficient to only name it? As mentioned several times, the purpose of the system of rituals is to establish the highest and most supreme kind of human race. Viewed from this point, it is every parent's duty to give their offspring such a name that would forever remind him/ her of particular target, a particular goal of life.

Not to use names of inanimate objects or plants and animals: It is often observed that children are named after inanimate objects or animals and plants. If a name itself signifies a lifeless object, how will it arouse inspiration to progress? Similarly, names related to animals and plants can also not provoke superior feelings in the child's heart.

Names arousing feeling of excellence should be used: There are two purposes of giving a name –one, to address the person and secondly, to provoke resplendent feelings in his/ her heart so that he /she can remember what to achieve in life. For instance, Veersen' means' one who demonstrates valour in war'; 'Vedvrat' means 'One who resolves to read vedas; Satyavrat, means one who is truthful in all his dealings in life.' These kinds of names arouse a certain sentiment. If the feeling with which the name was first given is not manifested in the person, it can be aroused through his name.

- Gyaaneshwaraarya, *Darshanacacharya*
To be continued....

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे :–

कदाचित् कश्चित् केनचिद्राज–पुरुषेण पीडितः सन् राज–सभायां प्रविशेत् तस्मै राजा शीघ्रमेव न्यायं कृत्वा तस्य हृदय–शूलमपहरेत् (द्र. ऋ. 1.171.4)। ये राजाधिकारिणः स्वाधिकार मदेन जनान् वञ्चयन्ति पीडयन्ति वा, तान् राजा तीव्र–दण्डेन बाधेत, येन राज–पुरुषा अप्रमत्तेन न्याय–मार्गे चलेयुरिति (द्र. ऋ.6. 53.5)। **न्याय–सभया न कदाचिद्दोषी दण्डमन्तरा त्याज्यः। स कदाचिदाचार्यो वा माता पिता वा पुत्रो वा यः कश्चिदपि स्यात्पक्षपातं विहाय सभया दण्डनीयः (द्र. ऋ. 1.42.4)।** दण्डेनैव सर्वे जनाः यथावद्राज–नियमान् पालयितुमर्हन्ति नान्यथा। अत एव सर्वासु प्रजासु सुप्तास्वपि दण्डो जागृतः स्यात् (द्र .ऋ. 4.17. 2, 4.17.15)। ये कुशिक्षया प्रजा दूषयन्ति स्वकृतेनापराधं स्थापयन्ति, तान्, व्यभिचारिणो, गवादि–पशु–हिंसकान्, चोरान, शत्रु–नाशार्थमप्रयन्त–शीलान् राजपुरुषान्, मांसभक्षिणो राजा मृत्यु दण्डपर्यन्तमत्यन्त–कठोर दण्डैर्वशमानयेत् (द्र .ऋ. 5.42.10, 6.16.31, 1.105.8, 1.42.3, यजु. 11.79, 52. 2, 35.19)।

याः सेना अभीत्वरीराव्याधिनीरुगणा ऽ उत।
ये स्तेना ये च तस्करास्तांस्ते ऽअग्नेऽपिदधामयास्ये।। (य. 11.77)

धार्मिक–राज–पुरुषैर्या अनुकूलाः सेनाः प्रजाश्च सन्ति, ताः सततं संपूज्य या विरोधिन्यो ये दस्य्वादयश्चोरा दुष्ट–वाचोऽनृतवादिनो व्यभिचारिणो मनुष्या भवेयुस्तेऽग्नि–दाहाद्युद्वेजन–करैर्दण्डैर्भृशं ताडयित्वा वशं नेयाः (द. भा.)

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन्।।(ऋ. 1.116.16)

हे राजन् ! त्वं परमेश्वरवत्पक्षापातं विहाय नृषु पितृवद्वर्तस्व। यथा जगदीश्वर–भयात् सर्व जगद्व्यवतिष्ठते, तथैव तव दण्ड–भयात् सर्वजगद्धोगाय कल्पताम्। .... (द.भा.)।

एवं स्वामि–दयानन्द–मत–दर्शनेन स्पष्टं यत्स्वामि–दयानन्द ऋषि परम्परामनुसरन् कठोर–दण्ड व्यवस्थामेव प्रतिपादयति। तेन प्रजा दण्डादुद्विग्ना दोषेभ्यः सर्वथा निवर्तिष्यन्ते। तत्र कदाचिन्निर्दोषी दण्डितो न स्यादित्याशंका स्यात्सा राज्ञः सभ्यानां च योग्यताप्रतिपादनेन निराक्रियते। जनपद–शासन–व्यवस्थायाञ्च अन्तिम–न्यायः स्व–जनपद एव भवतीति, स चाविलम्बितो भवतीति प्रजासु न्याये पूर्ण–विश्वासो भविष्यति। स्त्रीणां न्याय–व्यवस्था स्त्रीभिरेव कार्येति प्रतिपादनेन न्याय–प्रक्रियायां स्व–सूक्ष्म–चिन्तनं दर्शयति। एवं प्रकारेण राजाऽवश्यं बाह्याभ्यन्तर–शत्रून् स–मूल–घातं हत्वा देशं शत्रु–भय–रहितं कर्तुं शक्नोति।

अन्न –घृतादि–साधनैर्विना जीवनमेवासम्भवः। राज्ञा च

– आचार्यो रवीन्द्रः, आर्ष विश्वविद्यालयम् वडलूरु, कामारेड्डी (आं.प्र.)
(राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी, 5–6 सितम्बर, 09 को पाठित निबन्ध) क्रमशः

दुनिया में सबसे सुन्दर हाथ

एक छोटा बच्चा अपने माता–पिता के साथ अपने आरामदेह घर में बैठा था। वह अपनी माँ से बोला–"माँ! आपका चेहरा दुनिया में सबसे दयालु व सुन्दर है। दिल चाहता है कि मैं इसे हमेशा देखता रहूँ।"

जैसे ही वह ये शब्द बोल रहा था, उसकी नजर अपनी माँ के हाथों पर पड़ी। वे मुड़े हुए और बड़े कुरूप थे। वह बोल उठा– "माँ! आपके हाथ दुनिया में सबसे कुरूप हाथ होंगे। मैं उनकी तरफ देख भी नहीं सकता।"

इस पर पिता ने बेटे को अपनी गोद में बैठाया और कोमलता से बोला–"मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक समय की बात है कि एक नन्हा बच्चा अपने पालने में शान्तिपूर्वक सोया हुआ था कि पालने को आग लग गई।"

लड़के ने पूछा–"बच्चे का क्या हुआ?" "बच्चे की देखभाल के लिए जो आया रखी थी, वह डरकर भाग गई," पिता ने बात जारी रखी, "लेकिन माँ ने आग देख ली और बच्चे को बचाने दौड़ी। उसने देखा कि बच्चे के चारों ओर आग इतनी फैल चुकी थी कि बच्चे को घायल हुए बिना उठाना असंभव था। सो उसने हाथों से ही आग बुझाई। उसके हााथ बुरी तरह जल गये। उन्हें ठीक होने में कई महीने लग गये। पर उन पर दाग फिर भी रह गये।''

छोटा बच्चा चहक उठा–"कितनी बहादुर माँ होगी!"

पिता ने पूछा–"जानते हो, वह कौन थी? तुम्हारी माँ थी। उसके कुरूप हाथों ने ही तुम्हें बचाया था।''

यह सुन बच्चे की आँखों से आँसुओं की धारा फूट पड़ी। वह अपनी माँ की तरफ मुड़ा और बार–बार उसके हाथ चूमने लगा। वह रोते हुए बोला–"माँ, यह दुनिया के सबसे सुन्दर हाथ हैं।"

– साभार – : 'आत्मिक पोषण'

पृष्ठ ३ का शेष

रहा हूँ। आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार करने के लिए मल्टी मीडिया का अधिक से अधिक सहयोग लेना हितकर है। ऐसे भव्य और आकर्षक आयोजन के लिए मैं आयोजनकर्ताओं को साधुवाद देता हूं। इस अवसर पर **कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय श्री धर्मपाल जी ने** आर्यजनों को होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मैं इस कार्यक्रम को देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। **लोगों के हर्षित और उल्लसित चेहरे** देखकर मेरा मन खुशी से झूम रहा है। ऐसे ही आयोजनों से संगठन को मिलता बल मिलता है। उन्होंने ऐसे आयोजनों में अपनी ओर से हर प्रकार का सहयोग देने का अश्वासन दिया। उन्होंने इस आयोजन के लिए सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद और आशीर्वाद दिया। महाशय जी की उपस्थिति से ही कार्यकर्त्ताओं और उपस्थित जन समुदाय में उत्साह की लहर दौड़ जाती है। महाशय जी ने फूलों की होली खेली और कार्यक्रम का आनन्द उठाया। इस अवसर पर **श्री रमाकान्त गोस्वामी** (उपाध्यक्ष, दिल्ली जल बोर्ड) ने कहा कि आर्यसमाज की संगठनात्मक क्षमता बढ़ रही है। आयोजन में आये इतने लोगों के उत्साह को देख कर तो लग रहा है कि आर्यसमाज को सनातन धर्म का नेतृत्व करने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैं सात वर्षों से **आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह** में शामिल हो रहा हूँ। प्रतिवर्ष इसमें भाग लेने वालों की संख्या निरतंर बढ़ रही है। यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है। इस समारोह में मुंजाल शोवा लिमिटेड के चेयरमैन सभा के अनन्य सहयोगी और हमारे प्रेरक श्री योगेश मुंजाल विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री राजेश लिलौठिया (सचेतक, दिल्ली विधानसभा), श्री सुभाष सचदेवा (विधायक) श्री यशपाल आर्य, श्रीमती प्रोमिला घई (निगम पार्षद) श्री आनंद कुमार, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, श्री अर्जुन देव चड्ढा (प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा) एवं उनके सहयोगी उपस्थित थे।

इससे पूर्व नवसस्येष्टि यज्ञ किया गया। गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिप्रसाद जी थे। यजमानों का परिचय ब्र. राजसिंह जी आर्य, सभा प्रधान ने दिया। यज्ञ के मुख्य **यजमान श्रीमती प्रियंका एवं श्री वरुण ठुकराल, श्रीमती उमाशशि दुर्गा एवं श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्रीमती स्नेह एवं श्री जितेन्द्र भाटिया, श्रीमती अंशिका एवं श्री आदित्य तनेजा थे।**

यज्ञोपरान्त अपने सारगर्भित प्रवचन में **श्री ज्ञानेश्वर आचार्य (रोजड़, गुजरात)** ने यज्ञ की महिमा का बखान करते हुए कहा कि यज्ञ आज न केवल भारतवर्ष के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए परम उपयोगी है। प्रायः लोग समय की कमी का बहाना बनाते हुए यज्ञ से मुँह मोड़ते हैं। पर ऐसे लोगों के पास और दुनियादारी के अन्य कामों को निपटाने के लिए समय ही समय रहता है। कुछ लोग यज्ञपात्र, घी, सामग्री आदि की अनुपलब्धता को बहाना बनाते हैं। उन्होंने उपस्थित जन समुदाय से प्रतिदिन यज्ञ करने का आह्वान करते हुए यज्ञ से होने वाले लाभों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन होना चाहिए। गुजरात में कई घरों में प्रतिदिन यज्ञ होता है। यज्ञ करेंगे तो अनाज की कमी हो ही नहीं सकती। यज्ञ से कृषि एवं गौ संवर्धन होता है। आज खेतों में फसल उगाने के लिए रासायनिक खादों का प्रयोग हो रहा है। इससे तरह–तरह की बीमारियां फैल रही हैं। वायु के साथ साथ जल का भी प्रदूषण दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इन समस्याओं का समाधान है "दैनिक यज्ञ"। जब घर–घर में दैनिक यज्ञ होंगे तो उक्त समस्याओं से हमें छुटकारा मिल जायेगा। यज्ञ से हमारे अन्दर मानवीय गुणों का आधान होता है। इसलिए उसका खूब प्रचार–प्रसार होना चाहिए। इससे पूर्व श्री आचार्य जी का स्वागत **श्री राजीव आर्य, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा** ने किया। आचार्य जी का परिचय एवं स्वागत **ओमप्रकाश आर्य, उप प्रधान, दिल्ली सभा, श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, कर्नल आर. के. वर्मा विद्यालय मैनेजर** ने किया। प्रवचन के पश्चात् **मशीन द्वारा** यजमानों पर फूल बरसाए गए एवं उपस्थित लोगों ने आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के कर्मठ नेता श्री **रामनाथ सहगल** (जो अपनी चार पीढ़ियों– स्वयं, पुत्र, पौत्र और प्रपौत्री के साथ कार्यक्रम में उपस्थित थे,) का अभिनन्दन किया गया। सभा की ओर से उन्हें **अभिनन्दन पत्र** भेंट किया गया।

इस अवसर आर्यसमाज के अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया गया। **वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी के लिए** विशेष सहयोग करने वाले **श्री विद्या मित्र ठुकराल जी** का सम्मान किया गया। **श्री अभिमन्यु चावला** करीब दस सालों से आर्यसमाज के कार्यक्रमों और गतिविधियों के समाचार नियमित रूप से समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज रहे हैं। उनकी इस सेवा के लिए उनका **सम्मान** किया गया। **श्री राजेन्द्र दुर्गा** लगभग पचीस वर्षों से आर्यसमाज के कार्यक्रमों और आयोजनों के समाचारों को प्रकाशित करने के लिए समाचारपत्रों में भेज रहे हैं। वह विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक मीडिया में समाचारों के कवरेज में योगदान कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव, ऋषि बोधोत्सव, आर्यसमाज स्थापना दिवस आदि पर दूरदर्शन और आकाशवाणी पर वार्ता और परिचर्चाएं आदि होती हैं। इनमें श्री दुर्गा जी का पूरा–पूरा सहयोग मिलता है। उनकी इस सेवा को ध्यान में खते हुए उन्हें **सम्मानित** किया गया। **श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता** सात सालों से सभा के कार्यालय को विशेष सहयोग दे रहे हैं। इसके साथ ही वह प्रति माह विशेष रूप से सहयोग करते हैं। इसलिए उन्हें **सम्मानित** किया गया।

श्री सत्यपाल पथिक एवं उनके सुपुत्र **श्री दिनेश पथिक** ने सुमधुर भजन प्रस्तुत कर वातावरण को भावविभोर कर दिया। पं0श्री सत्यपाल पथिक ने होली का गीत प्रस्तुत किया, जिसे सुनकर उपस्थित जन समुदाय भी उनके स्वर में स्वर मिलाने लगा। इससे पूर्व श्री दिनेश पथिक जी का स्वागत **श्री अनिल तनेजा** ने किया। **श्री अरुण वर्मा** ने **श्री सत्यपाल पथिक** का स्वागत किया। **श्री सतीश चड्ढा** द्वारा तबला वादक **श्री ओमप्रकाश शर्मा** का स्वागत किया गया। मंच का संचालन करते हुए **सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य** ने विशिष्ट अतिथियों का परिचय दिया। उन्होंने दिल्ली सरकार के पूर्व परिवहन **मंत्री श्री राजेन्द्र गुप्ता का विशेष परिचय** दिया। कार्यक्रम के बीच–बीच में श्री विनय आर्य ने सभा की योजनाओं के बारे में बताया एवं इस अवसर पर सभा द्वारा उपलब्ध कराई गई सेवाओं की सूचना दी। उन्होंने कहा कि इस साल का संकल्प वाक्य है –**"अन्धविश्वास और पाखण्ड व्यक्ति और समाज को कर्महीन बनाते हैं। आओ, हम सब जागें और जगायें।"** इस संकल्प वाक्य को दृष्टि में रखते हुए दिल्ली के आर्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। मंच को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। वहां बड़े–बड़े बैनर लगे थे। उस पर संकल्प वाक्य लिखा था– "अन्धविश्वास और पाखण्ड और समाज को कर्महीन बनाते हैं। आओ, हम सब जागें और जगाएं।" विद्यालय के बाहर सड़क के दोनों ओर ओ३म् ध्वज लहरा रहे थे।

धन्यवाद एवं आभार:– इस समारोह को सफल बनाने में अनेक कार्यकर्ताओं का भरपूर सहयोग मिला। अतः सभा निम्नलिखित महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करती है और आशा करती है कि भविष्य में भी उनका सभा को इसी प्रकार सहयोग मिलेगा। – **शेष पृष्ठ 6 पर**

इस साल का लक्ष्य और संकल्प वाक्य

"अन्धविश्वास और पाखण्ड व्यक्ति और समाज को कर्महीन बनाते हैं। आओ, हम सब जागें और जगायें।"

श्री राजेन्द्र गुप्ता जी का परिचय

आप श्री लाला रघुमल जी के नाती (जिनके नाम से रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल राजा बाजार, निकट शिवाजी स्टेडियम चल रहा है।) और लाला श्री हंसराज गुप्ता जी के सुपुत्र हैं। आपके पिता आर्यसमाज के कर्मठ नेता थे। वे दिल्ली के महापौर थे। संयोग से आप भी दिल्ली के महापौर रह चुके हैं। आप दिल्ली सरकार के पूर्व परिवहन मंत्री भी हैं। वर्तमान में आप लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के सचिव हैं। आप आर्यसमाज के कार्यों एवं गतिविधियों में सोत्साह भाग लेते हैं। आप आर्यसमाज एवं उससे जुड़ी संस्थाओं का आर्थिक सहयोग भी करते हैं।

ब्रह्म–सूत्र : द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (18)

ज्ञोऽत एव।।18।।

अर्थ :– (ज्ञः) ज्ञाता– चेतन स्वरूप आत्मा (अत एव) इस कारण से ही– आत्मा के नित्य आदि होने से ही तथा श्रुति आदि शास्त्रों से उसके नित्य व अपरिणामी और ज्ञानस्वरूप प्रतिपादित किए जाने से।

भावार्थ :– पिछले सूत्रों में जीवात्मा के उत्पन्न होने और मरने का निषेध किया गया है तथा उसे नित्य सिद्ध किया गया है। नित्यत्व को आधार बना कर उसे चेतन बताया गया है। सूत्र का अभिप्राय यह है कि चेतन तत्त्व नित्य तथा सदा एकरूप रहता है। उसमें किसी प्रकार के परिणाम की सम्भावना नहीं होती अर्थात् वह अपरिणामी है। परन्तु अचेतन तत्त्व प्रकृति नित्य तो है; परन्तु वह परिणामी है इसलिए वह नित्य होने पर भी चेतन नहीं है। नित्य होने से आत्मा को चेतन स्वरूप सिद्ध करना, यह स्पष्ट करता है कि वह परिणाम धर्म से रहित है। ऐसी स्थिति में जिन आचार्यों ने जड़ जगत् को चेतन ब्रह्म का परिणाम समझा उनका यह विचार सूत्रकार की दृष्टि से एकदम विपरीत है। प्रश्न उपनिषद् (4/9) में कहा है–

"एष हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धाकर्त्ता विज्ञानात्मा पुरुषः।।"

अर्थात् द्रष्टा (देखनेवाला), स्प्रष्टा (स्पर्शकरने वाला), श्रोता (सुनने वाला) घ्राता (सूंघने वाला) रसयिता चखने वाला), मन्ता (मनन करने वाला), बोद्धा (जानने वाला), कर्त्ता (कर्म करने वाला) (विज्ञानात्मा) जीवात्मा पुरुष चेतन स्वरूप है। उधर बृहदारण्यक उपनिषद् (4/3/20) में कहा है– **कतम आत्मेति यो ऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृदयन्त ज्योतिः पुरुषः।।"**

अर्थात् यह आत्मा कौन सी है? जो विज्ञान स्वरूप है, प्राणों में रहते हुए हृदय प्रदेश में विराजमान रहती है। इस प्रकार प्रमाणों से जीवात्मा का चेतन स्वरूप सिद्ध होता है।

– शिष्य पूछता है नित्य, चेतन स्वरूप परमात्मा को सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी स्वीकार किया गया है। क्या चेतना स्वरूप, नित्य जीवात्मा भी परमात्मा के सामने सर्वव्यापक है? सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा बोधोत्सव पर भव्य सम्मेलन सम्पन्न

राष्ट्रीय विचारधारा के आन्दोलन का नाम ही आर्यसमाज है – प्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द कॉमिक्स का मराठी में अनुवाद करने की आवश्यकता है – विनय आर्य

आर्यसमाज एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय विचारधारा के आन्दोलन का नाम ही आर्यसमाज है। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा 6 फरवरी को महर्षि दयानन्द बोधोत्सव निमित्त प्रथम गुरु–शिष्य मिलन के 150 वर्ष पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज का देश की उन्नति में अविस्मरणीय योगदान है और हमेशा रहेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि आर्यसमाज के विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए आने वाली पीढ़ी में आर्यसमाज के प्रति निष्ठा जगानी होगी। उसमें राष्ट्र भक्ति की भावना उत्पन्न करनी होगी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द की जीवनी (कॉमिक्स) का मराठी में अनुवाद आवश्यक है। कार्यक्रम में डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (दिल्ली) डॉ. महावीर (हरिद्वार) डॉ. ब्रह्म मुनि आदि ने विचार रखे। इससे पूर्व विश्व शान्ति यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् समाज के सदस्यों ने ध्वजारोहण किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद जयसिंह राव गायकवाड़ ने कहा कि मैं जन्म से ही आर्यसमाजी हूँ तथा राजनीति में भी महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रचार–प्रसार करता हूँ। संयोजक पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, सभा प्रधान पं. सत्यवीर शास्त्री, सभा मंत्री अनिल शर्मा का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा।

– पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, संयोजक

समारोह के अवसर पर आर्यजनों को सम्बोधित करते श्री विनय आर्य एवं मंचस्थ अधिकारीगण।

आर्यसमाज दरियागंज नई दिल्ली में

होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज दरियागंज में होली मिलन समारोह उल्लासपूर्वक मनाया गया। इसका शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। श्रीमती चन्द्रकान्ता चौहान, वीना पुरी व कृष्णा शर्मा ने होली–मंगल मिलन के भजन प्रस्तुत किये। प्रधान श्री महेन्द्र सिंह चौहान तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. ओमप्रकाश ढल्ला आदि ने होली के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती सुषमा गुप्ता व श्रीमती इन्दिरा बापोड़िया के सौजन्य से आर्य बालगृह के 100 विद्यार्थियों को पाठ्यसामग्री उपलब्धा करायी गयी।

– महेन्द्र सिंह चौहान, प्रधान

बाल (लघु) सत्यार्थप्रकाश

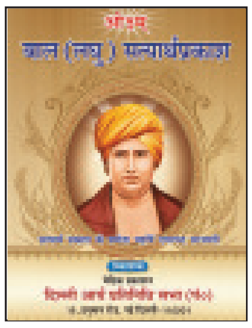

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और श्रीमती अरुणा सतीजा द्वारा लिखित बाल (लघु) सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया गया है। इस लघु पुस्तिका में सत्यार्थप्रकाश को बहुत ही सरल एवं सहज शब्दों में संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया गया है। इसकी भाषा–शैली प्रभावी एवं रोचक है। इसमें मूल सत्यार्थप्रकाश के विषयों को प्रस्तुत किया गया है।

सभा ने इसका प्रकाशन विशेष रूप से बच्चों और आम लोगों के पठनार्थ किया है। लेखिका ने सत्यार्थप्रकाश को उल्लास में बाँटने का उनका प्रयोजन स्पष्ट कर दिया है। वह लिखती हैं– "समरस दयानन्द स्वयं उल्लसित रहते हुए लोगों को उल्लास देना चाहते थे। अतः उन्होंने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को पाठ, अध्याय आदि में विभाजित न कर समुल्लास शीर्षक दिया ताकि दुनिया के लोग अच्छी तरह उल्लसित और प्रफुल्लित जीवन जीने वाले बनें।" महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थप्रकाश को सार रूप में प्रस्तुत करना आसान काम नहीं है; जबकि उसे बच्चों और आम जन के लिए लिखना हो तो यह काम और भी कठिन हो जाता है; परन्तु लेखिका ने बड़ी मेहनत से इसे तैयार किया है। उन्होंने इसे रोचक और पठनीय बनाने में बहुत मेहनत की है। पुस्तक के बीच–बीच में सत्यार्थप्रकाश पर कुछ महापुरुषों की सम्मतियाँ भी दी गयी हैं, जिन्हें पढ़कर आपको इसका महत्त्व मालूम हो जायेगा। पुस्तक का कवर आकर्षक है, छपाई भी बढ़िया है। इस पुस्तक को पढ़ने वाला पाठक चाहे वह बच्चा हो या और कोई, उसका मन मूल सत्यार्थप्रकाश पढ़ने का करेगा। सभा ने इस पुस्तक का प्रकाशन इस दृष्टि से भी किया है कि इसे आम लोगों में बांटा जाये ताकि वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार हो सके और यह पुस्तक अधिक से अधिक विद्यार्थी पढ़ें और महर्षि दयानन्द के विचारों से अवगत हो सकें।

– डॉ. नरेन्द्र कुमार

पुस्तक समीक्षा

मैक्समूलर की खोट को दर्शाती है यह रचना

मैक्समूलर द्वारा वेदों का विकृतीकरण : क्या, क्यों और कैसे?

लेखक : डॉ. के. वी. पालीवाल **मूल्य: 40 रुपये, पृष्ठ : 120**

प्रकाशक : हिन्दू राईटर्स फोरम, 129 बी. एम. आई. जी. राजौरी गार्डन, नई दिल्ली –27,

सृष्टिकाल से ही वेद आर्यों के प्राण हैं और भविष्य में भी रहेंगे। वैदिक आर्य (भारतीय) संस्कृति का आदि मूल एवं प्रेरणा स्रोत है। उन्नीसवीं सदी के मध्य काल में जहाँ भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती (1824–1883) वेदों को ईश्वरीय ज्ञान व सब सत्य विद्याओं को आदि मूल घोषित कर रहे थे तो दूसरी तरफ फ्रेडरिक मैक्समूलर (1823–1900) वेदों को विकृत कर भारतीयों के धर्म व संस्कृति को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए जी जान से प्रयास कर रहा था। इसमें तत्कालीन ब्रिटिश सरकार उसे पूर्ण समर्थन दे रही थी।

डॉ. पालीवाल ने इन सब पर तर्क पूर्ण लेखनी चलाते हुए सप्रमाण सिद्ध किया है कि ब्रिटिश शासकों ने मैक्समूलर को अपने धार्मिक–राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऋग्वेद का भाष्य करने के लिए अनुबंधित किया था। जबकि वह न तो वैदिक संस्कृत जानता था, न अँग्रेजी और न ही वेद भाष्य करने की उसमें योग्यता थी। मैक्समूलर ने अपने वेदभाष्य के माध्यम से अनके नवीन संकल्पनाओं को जन्म दिया। जैसे 'आर्य बाहर से आये, वेद विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कालों में लिखे, वेद 1200 वर्ष ईसा पूर्व के हैं, वेद बाइबिल से निम्न स्तर के हैं, वेद में एक विचित्र प्रकार का बहुदेवतावाद है। वास्तव में मैक्समूलर के समस्त सिद्धान्त झूठे सिद्ध हो चुके हैं। उसका छद्म ईसाई स्वरूप सबके सामने आ गया है। जर्मनी के लोगों ने मैक्समूलर को कहा– ***"तुमको जर्मन कहलाने का और अधिक अधिकार नहीं रह गया है।"*** (पृ0 111) डॉ. पालीवाल ने मैक्समूलर के अंग्रेजी में मूल पत्रों व उदाहरणों को देकर पुस्तक की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ा दी है। वेदों के विषय में उनका यह प्रयास सराहनीय है। निःसंदेह यह पुस्तक 160 वर्षों से मैक्समूलर के वेद सम्बंधी दुष्प्रचार को जड़ से उखाड़ने और देशभक्त वेदप्रेमियों को जगाने में एक सशक्त भूमिका निभायेगी। लेखक ने इसे सर्वोपयोगी बनाने का प्रयास किया है। पुस्तक पठनीय है और शोधकर्ताओं के लिए विशेष लाभकारी है।

– डॉ. विवेक आर्य, प्रशान्त विहार

राष्ट्रमंडल खेलों में गोमांस परोसने के निर्णय के खिलाफ राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों में विदेशियों को गोमाँस परोसने के निर्णय के विरोध में गोमाँस– निषेध अभियान समिति के एक शिष्टमंडल ने 24 फरवरी 2010 को राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल से भेंटकर उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। शिष्टमंडल में सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, महा मंडलेश्वर स्वामी भक्तहरि, जसवीर सिंह नामधारी, महाशय धर्मपाल, विनय आर्य, डॉ. सुरेन्द्रसिंह कादियाण, प्रो. जयदेव आर्य, आचार्य बलदेव नैष्ठिक, डॉ. धर्मवीर, अजय भल्ला, सुभाष विद्यालंकार आदि थे। भेंट के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामप्रकाश ने कहा कि आगामी राष्ट्रमंडल खेलों में गोमाँस परोसे जाने के समाचार से धर्मप्राण भारत के करोड़ों नागरिक उद्वेलित और मर्माहत हैं। अत: उनकी भावनाओं को समझने का राष्ट्रपति जी कृपया प्रयास करें। श्री सोमपाल शास्त्री ने कहा कि सरकार गोमाँस के निर्यात पर 30 प्रतिशत सब्सिडी देकर परोक्ष रूप से गोहत्या और गायों की तस्करी को बढ़ावा दे रही है, जो कि संविधान और उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के विरुद्ध है। श्री जसवीर सिंह नामधारी ने गोरक्षा के लिए अनेक नामधारियों तथा अन्य साधु–सन्तों के अगिणत बलिदानों का जिक्र करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपने एक लघु ग्रन्थ गोकरुणानिधि में लिखा है कि गोवंश का नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। स्वामी भक्तहरि ने राष्ट्रपति से बहुजन नागरिकों की आस्था–विश्वासों का सम्मान और सुरक्षा करने का निवेदन किया।

– प्रो. जयदेव आर्य, प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी

विरोध करने की अपील

गोमांस निषेध अभियान समिति ने राष्ट्रमण्डल खेलों में भारत सरकार द्वारा अतिथियों एवं खिलाड़ियों को गोमांस परोसने के प्रस्ताव को वापस लेने के लिए जन जागरण अभियान छेड़ दिया है। समिति ने इसके विरोध में **प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, 7 रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली** को फैक्स–011–23015603या ईमेल – manmohan@sansad.nic.in करने/पत्र भेजने के लिए आम जनता से अपील की है।

– सत्यदेव बन्धु, संयोजक

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी से डॉ० रामप्रकाश एवं महाशय धर्मपाल जी के नेतृत्व में भेंट करते प्रतिनिधि मंडल के सदस्य। इस अवसर पर गोमांस विरोध समिति की ओर से महामहिम राष्ट्रपति जी को ज्ञापन देते आर्यनेता।

आर्यसमाज सीतापुरी, नई दिल्ली वार्षिकोत्सव मनाया

आर्यसमाज सीतापुरी का चतुर्थ वार्षिकोत्सव 21फरवरी को मनाया गया। कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री रामनाथ सहगल, श्री अजय सहगल, श्री विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली सभा)) आदि महानुभावों ने अपने शुभ वचनों से सभी को प्रेरणा एवं आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आर्य बाल विद्यालय के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। *– अंजु चौहान, प्रधान*

मॉरीशस की शान है आर्यसमाज – चूनी

मॉरीशस के वर्तमान निर्माण में आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका – विनय आर्य

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली के 26 वें वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि श्री मुकेश्वर चूनी (हाईकमिश्नर मॉरीशस) ने विशाल समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा– "मैं आज जिस उच्च पद पर हूँ, उसका श्रेय युग प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज को हैं। उनके अनगिनत उपकार भुलाये नहीं जा सकते। आर्यसमाज मॉरीशस की शान है।" दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने कहा कि मॉरीशस के वर्तमान निर्माण में आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ. निष्ठा विद्यालंकार व आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन, पं. भानुप्रकाश के भजन हुए। स्वामी धर्ममुनि "दुग्धाहारी", महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.), श्री राजीव आर्य (महासचिव, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली) पार्षद श्री यशपाल आर्य, श्रीमती सरिता जिन्दल, श्री विवेक त्यागी, श्री सुनील जिन्दल, श्री संजय त्यागी अतिरिक्त कमिश्नर ऑफ पुलिस) आदि उपस्थित थे। *– ललित चौधरी, प्रधान*

आर्यसमाज विकासपुरी बाहरी रिंग रोड के वार्षिकोत्सव पर मंचस्थ अतिथि श्री मुकेश्वर चूनी, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, यशपाल आर्य एवं श्री राजीव आर्य।

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन में यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन में 21 फरवरी को यज्ञशाला का उद्घाटन महाशय धर्मपाल जी प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री रामनाथ सहगल, अजय सहगल, विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), सुभाष सचदेवा (विधायक), राजकुमार खुराना, श्रीमती उषा मेहता (निगम पार्षद) एवं समाज के अधिकारी, सदस्य और अनेक लोग उपस्थित थे। इससे पूर्व यज्ञ की ब्रह्मा लक्ष्मी भारती ने यज्ञ कराया और प्रवचन दिया। आचार्य श्री सतीश का भजनोपदेश हुआ। धर्माचार्य उमेश शर्मा ने भी प्रवचन दिया और उन्होंने यज्ञ आयोजन में सहयोग दिया। *– लक्ष्मण देव, मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर समारोह

रविवार 21 मार्च 2010

स्थानः आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए.सी. ब्लॉक) के सामने, नई दिल्ली
यज्ञ : प्रातः 9 बजे से 10 बजे ब्रह्मा : आचार्य श्री इन्द्रदेव जी
भजनः महिला समाज टैगोर गार्डन, कीर्ति नगर एवं जनकपुरी ए ब्लॉक

सार्वजनिक सभा प्रातः 10.45 से 1.00 बजे तक

अध्यक्षः धर्ममुनि जी दुग्धाहारी (आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

– सुरेन्द्र बुद्धिराजा, प्रधान

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक–युवतियों हेतु परिचय सम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा प्रारंभ की गयी आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के लिए पंजीकरण किया जा रहा है। कुछ आर्य जनों ने इसके लिए 28 फरवरी को आयोजित आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में पंजीकरण कराया था। उपलब्ध फार्मों के आधार पर विवाह डायरेक्टरी के प्रकाशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। परिचय सम्मेलन से 15 दिन पूर्व पंजीकृत महानुभावों को डायरेक्टरी उपलब्ध करा दी जायेगी। **यह सम्मेलन जून 2010 में आर्यसमाज पंजाबी बाग (प0) में होना प्रस्तावित है।** अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे 5/– रुपये का डाक टिकट लगा अपना पता लिखा लिफाफा भेजकर पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.delhisabha.com से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **100 रुपये (एक सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए इस योजना के **संयोजक श्री गोविन्द लाल जी (मोबा. 9811623552) एवं श्री कंवरभान खेत्रपाल जी (9210484859)** से संपर्क कर सकते हैं।

– विनय आर्य, महामंत्री , 9958174441

योग शिविर एवं बृहद् यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुर गढ़ में 22 से 28 मार्च तक स्वामी अमृतानन्द (दयानन्द विद्यापीठ साधक जामनी आश्रम म.प्र.) की अध्यक्षता में **योग शिविर एवं बृहद् यज्ञ** का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी (मुख्याधिष्ठाता आश्रम) होंगे। विशेष जानकारी के लिए दूरभाष 01276–230195 पर सम्पर्क करें।

– सत्यपाल आर्य, संयोजक

खेद व्यक्त :– पाठकों की सूचनार्थ है कि कॉमिक्स प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम चयन के कार्य तथा अन्य अपरिहार्य कारणों से साप्ताहिक आर्यसन्देश के गत दो अंक 1 से 7 मार्च एवं 8 से 14 मार्च, 2010 प्रकाशित नहीं हो सके। अतएव इस अंक को 12 पृष्ठों का प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकों को होने वाली असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *– सम्पादक*

आर्यसन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
प्रकाशन की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
मुद्रक का नाम	:	ब्र0 राजसिंह आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	ब्र0 राजसिंह आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

मैं ब्र0 राजसिंह आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है सही है।

– ब्र0 राजसिंह आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

'एक शाम राष्ट्र के नाम'

आर्यसमाज एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश (दक्षिण पूर्वी मंडल) द्वारा में 23 मार्च को सायं 4 बजे से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पार्क प्रीत विहार में **'एक शाम राष्ट्र के नाम'** का आयोजन किया गया है।

– वीरेन्द्र आर्य, संचालक

महिला आर्यसमाज अशोक नगर में

सत्यार्थप्रकाश प्रवचन माला

16 मार्च से 24 मार्च 2010

प्रवक्ता : आचार्य श्री इन्द्रदेव जी
यज्ञ–भजन : 3.00 से 4.15 बजे
प्रवचन : 4.15 से 5.15 बजे तक
शंका समाधान : 5.15 से 5.30 बजे

– श्रीमती विजय वर्मा, संयोजिका

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

वैवाहिक – सेवा

Suitable match for Arya family Punjabi girl 21-9-1979, 6.35pm/Chandigarh, B.com [H], C.A. working in private company in Delhi with package of Rs. 10 Lakh per annum. No cast bar.
Contact: 9871816639

Caring, working bride for fair, handsome and established hearing impaired Artist & Graphic Designer [Bisa Agarwal, 30 Years, 5' 5"), from a highly reputed, cultured and well connected family living in a posh south Delhi colony. Boy wears digital hearing aids, can converse in Hindi & English and drives a car / motorcycle. Girl should be from similiar background but not hearing impaired. Caste is no bar.
Contact: 9654319048

शोक समाचार

श्रीमती कमला गाबा का निधन

महिला आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली–63 की पूर्व प्रधाना श्रीमती कमला गाबा, पत्नी स्वर्गीय श्री ज्ञानचंद गाबा का 26 फरवरी को प्रातः काल निधन हो गया। वह 67 वर्ष की थीं और करीब डेढ़ साल से बीमार थीं। वे आर्यसमाज के कार्यों में सदैव आगे रहती थीं। वह अपने पीछे पुत्र श्री इंद्रजीत गाबा एवं पुत्रवधू श्रीमती रेखा गाबा और पौत्र–पौत्रियां छोड़ गयी हैं। उनके निधन पर आर्यसमाज के सभी सदस्यों और शुभचिन्तकों ने गहरा शोक प्रकट किया है।

श्री सुधीर गुप्ता को पितृशोक

आर्यसमाज जबलपुर (म0प्र0) के विशिष्ट कार्यकर्ता श्री सुधीर गुप्ता के पिता श्री विक्रमादित्य गुप्ता का 23 फरवरी को बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में निधन हो गया। वह 76 वर्ष के थे। उनकी इच्छा के अनुसार उनके परिजनों ने उनका नेत्रदान कर दिया। वैदिक रीति से उनकी अन्त्येष्टि की गयी। उनकी स्मृति में 4 मार्च को आर्यसमाज बिलासपुर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी। इसमें स्वामी धर्मानन्द जी, श्री प्रकाश आर्य आदि शामिल हुए। वे अपने पीछे पत्नी श्रीमती निर्मला देवी, पुत्र सुधीर–पुत्रवधू श्रीमती सौमित्र, चार पुत्रियां– संयोगिता गुप्ता, शशिकला, सुषमा और शालिनी को छोड़ गए हैं।

पं० प्रभात कुमार आर्य को पत्नीशोक

10 फरवरी 2010 की प्रातःकाल पं0 श्री प्रभात कुमार आर्य, पुरोहित एवं भजनोपदेशक आर्यसमाज मंदिर रुद्रपुर, उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी आर्या का निधन हो गया। वह धार्मिक विचारों की थी और आर्यसमाज के कार्यों में भाग लेती थीं। 14 फरवरी को उनकी स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अनेक गणमान्य लोगों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

श्री खेमकरण चुग को भ्रातृशोक

आर्यसमाज डेरावाल नगर, दिल्ली–9 के संरक्षक श्री खेमकरण चुग के अग्रज श्री भगवान दास जी का गत दिनों निधन हो गया। वह 93 वर्ष के थे। वे अपने पीछे पुत्र का भरा–पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

–सम्पादक

– जारी पृष्ठ 5 प

तिहाड़ जेल में यज्ञ सम्पन्न

26 फरवरी को तिहाड़ जेल परिसर में स्थित जेल संख्या पांच में आर्यसमाज नोएडा के सदस्यों द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अरमान संस्था के तत्वावधान में प्रातः 9 से 11 बजे तक मासिक यज्ञ किया गया।

मनाया बोधोत्सव

22 फरवरी को वेद प्रचार महिला मण्डल की ओर से पंजाबी बाग (पश्चिमी) में मनाया गया। आर्यसमाज पंजाबी बाग (पश्चिम) की प्रधाना, मन्त्राणी और कोषाध्यक्ष द्वारा मण्डल की प्रधाना सरोजनी जी का स्वागत किया। स्वामी दयानन्द जी की जीवन झांकियाँ बहनों द्वारा प्रस्तुत की गई।

'म. हीरालाल जीवन वृत' का विमोचन

21 फरवरी को आर्यसमाज बीकानेर–गंगायचा के संस्थापक स्व. हीरालाल जी आर्य की 31वीं पुण्य तिथि पर उनका स्मरण किया गया। वैद्य क्षेत्रपाल आर्य द्वारा संकलित पुस्तक 'म. हीरालाल जीवन वृत' का विमोचन भी किया गया। समारोह में अनेक लोग सम्मिलित हुए।

आर्यसमाज चोपन में जन्मोत्सव

6 से 8 फरवरी तक आर्यसमाज चोपन, सोनभद्र (उ0प्र0) द्वारा महर्षि दयानन्द का 186वाँ जन्मोत्सव वैदिक ज्ञान गंगा महोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर पं0 सत्यवीर शास्त्री, पं0 रामचन्द शर्मा एवं पं0 रामाधार शास्त्री आदि ने महर्षि दयानन्द के विचारों प्रकाश डाला। 8 फरवरी नगर में शोभायात्रा निकाली।

– शम्भूप्रसाद आर्य, प्रधान

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज शांतिनगर सोनीपत

प्रधान	–	श्री हरिचन्द स्नेही
मंत्री	–	श्री हरीश आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री ब्रह्मदत्त नारंग

गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) का 42 वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 42 वां वार्षिक महोत्सव 6–8 फरवरी 2010 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्वत् सम्मान समारोह, गुरुकुल सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन आदि हुए।

–डॉ. कुंजदेव मनीषी

वाराणसी में दयानन्द जन्मोत्सव पर वैदिक गोष्ठी सम्पन्न

ऋषिवर दयानन्द के 186वें जन्मोत्सव पर 8 फरवरी, 2010 को प्रातः वैदिक योग– अध्यात्म मण्डल, वाराणसी के जियापुरा, चेतगंज में 'वैदिक विचार गोष्ठी' हुई। इससे पूर्व यज्ञ हुआ। श्री कृष्ण कुमार आर्य, श्री सत्येन्द्र आदि ने आर्यसमाज की मान्यताओं पर अपने विचार प्रकट किये। 12 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव मनाया गया।

बोधोत्सव मनाया

वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली एवं आर्यसमाज मंगोल पुरी के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव 14 फरवरी को प्रातः 9.00 से 12.30 बजे तक पार्क में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य आदि ने उपस्थित आर्यों को बोधोत्सव दिवस की बधाई दी। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। उन्हें पुरस्कार भी दिये गये।

– दुर्गा प्रसाद कालरा, मन्त्री

योगदर्शन की शंकाओं का समाधान

पातञ्जल योगदर्शन पर व्यासभाष्य में प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुसार योग के वास्तविक स्वरूप को जानने तथा इस पर शंकाओं के समाधान हेतु लिखें अथवा yogsolution@gmail.com पर ईमेल करें– *– सतीश आर्य, 15, पाकेट –1, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली*

आर्यसमाज मॉडल बस्ती का वार्षिकोत्सव का आयोजन

1 अप्रैल से 4 अप्रैल 2010

यज्ञ : ब्रह्माः पं. जयप्रकाश शास्त्री– प्रातः 7.30 से 8.30 तक, रात्रि 7.30 से 9 बजे तक पं. भजनोपदेशः नरेशदत्त जी, बिजनौर, (उ.प्र.)।

– अमरनाथ, मंत्री

आर्यसमाज कीर्ति नगर में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

18 से 21मार्च तक 5.30 से 6.30 बजे प्रभातफेरी निकाली जाएगी। 22 से 27 मार्च तक कीर्ति नगर के विभिन्न पार्कों में सायं 7.30 से 9.30 बजे यज्ञ व भजनोपदेश होंगे। यज्ञ ब्रह्मा–सोमदेव शास्त्री, भजना– श्री दिनेश पथिक। सम्मेलन–आर्यसमाज भवन में प्रातः10 से 1.00 बजे तक। पधारने वालों में आर्य केंद्रीय सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी प्रमुख हैं।– *ओमप्रकाश आर्य, प्रधान*

वैदिक नित्य कर्म विधि मात्र 25/–

वैदिक नित्य कर्म विधि स्व0 राजपालसिंह शास्त्री की स्मृति में प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक को जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रकाशक का दृढ़ संकल्प है। प्रथम संस्करण 17×27 का साइज, पृष्ठ 216, मूल्य 50.00 डाक व्यय अलग से देय होगा। प्रचारार्थ मूल्य 25/– मात्र है।

– मधुर प्रकाश, 011–23238631

आर्यसमाज सागरपुर में जन्मोत्सव

आर्यसमाज सागरपुर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ 7 फरवरी को मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन व उपदेश किए गए गए। भजन श्री देवीसिंह आर्य (मथुरा) के भजन हुए और दिल्ली सभा के विद्वान् श्री रामनिवास गुणग्राहक जी ने महर्षि की जीवनी पर प्रकाश डाला।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव सम्पन्न

12 फरवरी को कोटा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानन्द के बोध दिवस पर विचार गोष्ठी हुई। इसमें जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, डीएवी के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर विचार प्रकट किये।

– अर्जुन देव चड्ढा, मन्त्री

आर्यसमाज डी ब्लाक विकास पुरी में वेदकथा सम्पन्न

19, 20,21 फरवरी को आर्यसमाज डी ब्लाक विकास पुरी आर्यसमाज में ब्र. आचार्य राज सिंह जी आर्य द्वारा वेदकथा सम्पन्न हुई। भजन संध्या का कार्यक्रम श्री राजवीर शास्त्री व घनश्याम प्रेमी (बिजनौर) द्वारा हुआ। महिला सम्मेलन 20 फरवरी को सम्पन्न हुआ। यज्ञ श्री सूर्यदेव शास्त्री ने कराया।

– दयानन्द दहिया, मन्त्री

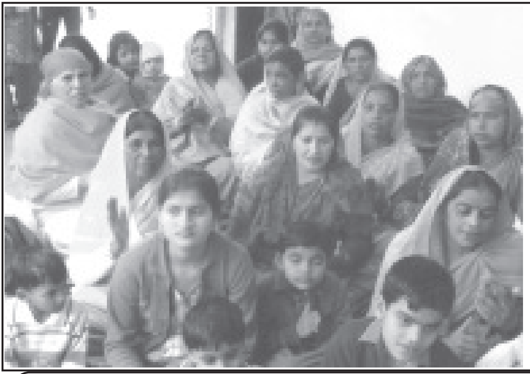

वैदिक महिला मंडली कादीपुर कुसक न. 1 एवं मुखमेलपुर गांव दिल्ली में महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव 8 फरवरी, 2010 को ब्र0सुमेधा दर्शनाचार्या के नेतृत्व में मनाया गया।

अनुरोधपूर्ण सूचना

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के अध्यक्ष पूज्य आचार्य विशुद्धानन्द जी के नेतृत्व में व आदरणीय डॉ.रघुवीर जी वेदालंकार के संयोजन में प्रकाशित होने वाले सत्यार्थप्रकाश के मानक संस्करण (जो कि महर्षि जी के मूल, 1884 में मुद्रित सत्यार्थप्रकाश के प्रमाण पर आधारित है) का मुद्रण कार्य 15 अप्रैल 2010 तक पूर्ण होने की आशा है। अनेक बन्धुओं ने अग्रिम बुकिंग करा भारी छूट प्राप्त कर ली है।

सभा का सत्यार्थप्रकाश प्रेमियों से/आर्यसमाजों/संस्थाओं से निवेदन है कि जो भी 100 प्रतियों से अधिक प्रति चाहें और इस छूट का लाभ उठाना चाहें वे 1 अप्रैल, 10 तक अवश्यमेव अग्रिम मूल्य न्यास को प्रेषित कर दें। छूट सीमा उसके पश्चात् समाप्त हो जावेगी।

सत्यार्थ प्रकाश	लागत मूल्य रु.	100 प्रतियां अग्रिम मूल्य रु.
सजिल्द	80.00	6000.00
अजिल्द	70.00	5000.00
प्रचार संस्करण	35.00	3000.00

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष

आलोक कुमार गुप्ता आर्यसमाज गोविन्दपुरी से निष्कासित

एतद्द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आलोक कुमार शास्त्री उर्फ आलोक कुमार गुप्ता जो कि आर्यसमाज गोविन्दपुरी में पुरोहित के पद पर कार्यरत थे, उन्हें उनके खराब आचरण व अनुशासनहीनता के कारण आर्यसमाज गोविन्दपुरी से निष्कासित किया जा चुका है। उनमें पुरोहित का कोई भी गुण नहीं है। इन्होंने टंकारा जैसी पवित्र संस्था की छवि को भी खराब किया है। सभी आर्यसमाजें तथा आर्य उपदेशक/भजनोपदेशक इनका सामाजिक बहिष्कार करें। कोई भी आर्यसमाज के नाम से उन्हें दान न दे।

अधिक जानकारी के लिए आर्यसमाज गोविन्दपुरी के मंत्री सुरेशचन्द्र गुप्ता फोन–9212082892 से सम्पर्क करें। *– विनय आर्य, महामंत्री*

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

★**मुख्य द्वार पर स्वागत करने** में श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री भजन प्रकाश आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्रीमती शारदा, श्रीमती सीमा आर्या, श्रीमती अंजु आर्या, श्रीमती मीनू आर्या, श्रीमती पुष्पा महावर, श्रीमती वीणा आर्या, श्रीमती स्नेह आर्या, श्रीमती मिथलेश आर्या, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्रीमती पूजा आर्या, श्रीमती आभा आर्या, कुमारी हविषा, कुमारी पर्णिका, कुमारी श्रुति, कुमारी मीनू, कुमारी आस्था का सहयोग मिला। आर्य वीर दल दिल्ली के संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य ने समारोह स्थल पर घूम–घूमकर कार्यक्रम में पधारे लोगों के माथे पर चन्दन का तिलक लगाया। आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर ने आगंतुकों पर गुलाब पाश से गुलाब जल का छिड़काव किया★ आठ हजार लोगों के लिए **शीतल पेय, जल एवं भोजन की व्यवस्था** करना आसान कार्य नहीं है। इसकी व्यवस्था करने में आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। इसमें श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री सुन्दर आर्य, श्री जितेन्द्र भाटिया, श्री वृहस्पति आर्य, श्री जगवीर आर्य, श्री संजय आर्य, श्री मनीष नरुला, श्री विजेन्द्र आर्य, श्री सुभाष आर्य, श्री नरेश पाल आर्य, श्री संजीव आर्य, श्री एस.पी. सिंह, श्री अरविन्द नागपाल, श्री सतीश चड्ढा, श्री सुखवीर सिंह आर्य ने भरपूर सहयोग दिया।

★ **बच्चों के मनोरंजन के लिए झूले एवं स्नैक्स** की व्यवस्था की गयी थी। इसकी जिम्मेदारी श्री बृजेश आर्य ने संभाली। ★ **स्वागत मुख्य अतिथि** कार्यक्रम में अनेक गणमान्य, मुख्य एवं विशिष्ट अतिथि शामिल हुए। हजारों आर्यों की उपस्थिति में अतिथियों को मंच पर आसन ग्रहण कराने में श्री धर्मपाल आर्य, श्री अनिल तनेजा, श्री राजीव आर्य, श्री शिवशंकर गुप्ता ने सहयोग किया। ★ **कार्यालय सजावट एवं सभा के स्टाल की व्यवस्था** में श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, आचार्य श्री रामनिवास 'गुणग्राहक', डॉ. नरेंद्र कुमार का सहयोग रहा। ★**सभा स्टाल** की पूर्ण देखरेख श्री अशोक कुमार (कार्यालयाधीक्षक) ने की। ★ **यज्ञ व्यवस्था** में श्री मदन मोहन सलूजा, श्री कंवर भान खेत्रपाल एवं श्री संजय आर्य ने सहयोग किया। ★**मंच पर विद्यालयों के कार्यक्रम का संयोजन पुरस्कार एवं बाल कलाकारों के भोजन की व्यवस्था** में श्री सुरेन्द्र रैली, श्री राजीव आर्य, श्री बलदेवराज आर्य, श्री अरविन्द नागपाल, प्रिं. श्रीमती सरोज यादव, श्री सतीश यादव, श्री अशोक महतानी का योगदान रहा। ★**प्रेस न्यूज:** कार्यक्रम के समाचार को बनाने एवं उसे समाचार पत्रों में देने के लिए श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री सुनील गुप्ता, श्री रजनीश वर्मा, श्री चन्द्र मोहन आर्य ने सक्रिय भूमिका निभाई। ★ **रंगोली सजावट** में श्री संजय आर्य (रानी बाग) का सहयोग मिला। ★ **ध्वज एवं मार्ग चिह्न व्यवस्था** की जिम्मेदारी श्री जयप्रकाश शास्त्री ने निभायी। ★ **फोन डाउन लोडिंग काउंटर** की देखभाल श्री नीरज बरुटा एवं अविचल आर्य ने की। ★ **विवाह पंजीकरण कांउटर** की जिम्मेदारी श्री गोविन्दलाल नागपाल और श्री कंवर भान खेत्रपाल ने निभाई। ★ **मल्टी मीडिया हॉल पंजीकरण** का कार्य सर्वश्री पीयूष आर्य, धर्मेश आर्य, उमेश आर्य ने किया।★ **सम्मान समिति** में श्री राजीव आर्य ने विशेष सहयोग दिया। ★ **आर्य विद्यालयों के कार्यक्रमों** के आयोजन में एस.एम. आर्या स्कूल (पंजाबी बाग, पश्चिम) की प्रिंसिपल श्रीमती उमा भारद्वाज, वाइस प्रिंसिपल श्रीमती जयश्री देशमुख, शिक्षिका श्रीमती नीतू कालरा, श्रीमती वन्दना, श्रीमती नीतू धवन, सुश्री वैशाली गोगिया, सुश्री रेणु, सुश्री गीता, सुश्री सुषमा गुप्ता, श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी एवं विद्यालय की प्रबंधन समिति के सदस्यों का भरपूर सहयोग मिला। **श्री संजीव सेठी एवं मुंशीराम सेठी** के द्वारा आर्य वीरांगना दल की कार्यकर्ता श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती स्नेह आर्या, श्रीमती सीमा आर्या, श्रीमती पुष्पा महावर, श्रीमती सुषमा रैली, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्रीमती पूजा आर्या, श्रीमती मीनू आर्या, श्रीमती अंजु आर्या, श्रीमती सुनीति आर्या, आस्था, अभिषा, श्रुति, पर्णिका का सम्मान किया गया। इनका सम्मान इसलिए किया गया क्योंकि ये कार्यकर्ता कई सालों से ऐसे आयोजन में छह–सात घंटे लगातार खड़े रह कर आगंतुकों का चन्दन का तिलक लगाकर स्वागत करती हैं और आयोजन की सफलता में सहयोग करती हैं।

रात के ठीक 8 बजे जैसे ही ***"जो हो ली सो हो ली, भुला दो उसे आज मिलने–मिलाने का त्यौहार है..."*** का गीत शुरू हुआ तो लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गयी। और फूलों की खेलनी शुरू हो गई। आर्यजनों ने एक–दूसरे को चन्दन का तिलक लगाया, गुलाब की पंखुड़ियों से होली खेली और उसकी शुभकामनाएं दीं। गुलाब की पंखुड़ियों से सारा वातावरण सुवासित हो उठा। हर व्यक्ति का चेहरा उत्साह से खिल उठा। जन समुदाय का उत्साह देखते ही बनता था। चारों तरफ गुलाब की पंखुड़ियां ही पंखुड़ियां ही दिखाई दे रही थीं। पंखुड़ियों की बौछार को देखकर लगता था मानो आसमान से उनकी वर्षा हो रही हो। मंद–मंद बहती शीतल बयार ने आयोजन में चार चांद लगा दिये थे। जो लोग पहली बार इसमें आये थे वे हैरान थे और कह रहे थे कि इतना विशाल और ऐसा सुव्यवस्थित आयोजन तो हमने पहली बार देखा। यहां आकर हमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की मान्यताओं के बारे में पता चला। बाल कलाकारों के कार्यक्रमों को देख पाखंड और अंधविश्वास की जानकारी मिली। अब हम स्वयं तो इनसे दूर रहेंगे ही और लोगों को भी इनसे दूर रखेंगे। इस समारोह में 8 हजार आर्यों ने भाग लेकर प्रीति भोज का आनन्द लिया।

इस कार्यक्रम की यह भी विशेषता रही कि आयोजनस्थल के मुख्यद्वार पर ही स्वागत समिति के सदस्यों ने आगन्तुकों के माथे पर चंदन का तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। शायद ही कोई ऐसा बचा होगा जिसके माथे पर चन्दन का तिलक न लगा हो। कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य ने किया। नौ बजे शांतिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।